



ॐ श्री सिद्धि लक्ष्मी देव्यै नमः ॥ ॥
ॐ नमः सर्व सिद्धि यागिनी श्या न
मः सर्व सिद्धि मा श्या न भानि श्या
दिता नन्द नदि ताये सकल कूल
चक्र नायिका ये रुग वल्ये च लुका
पालि न्ये तद्यथा ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

कौनमः पनमहंसितितिर्वात्ममा
जदिविषमापपुवप्रममनि सुक
लइतिगानिष्टकमदलनि सर्वा
पदाभाषितनलिसकतमकुप्रम
धतिदविआगछरहसुवला
रननरधिनानुवमहकलिम

मस्वमकुमदरखाहिः शिम्भूत
नहिन्दिः किन्धिः खपुनताण्य
रकुदयः तावद्यावत्तकलमना
नथान्नाधयः पनमकात्रलिक
एगवतिमहाएनवरूपधानिलि

ॐ क्रीं क्रीं अंगुष्ठाख्यानमः॥ ॐ क्रीं क्रीं
गङ्गातीर्थास्वाहा॥ ॐ क्रीं क्रीं मध्वमा
ख्यानमः॥ ॐ क्रीं क्रीं अनामिकाख्यान
मः॥ ॐ क्रीं क्रीं कनिष्ठिकाख्यानमः॥
ॐ क्रीं क्रीं कनकनपट्टाख्यानमः॥
य रुद्रा॥ ॐ वंद्यादि॥ आक्षत

मक्याख्यानमः॥ ॐ सदाशिव
प्रतापनायकमः॥ ॥ ॐ सिंह
सिंहमुखी सदाशिवगणः पातु
धनशाली भूतभूतकपाल
पातु॥ ॐ मन्त्रग्रन्थप्रिया॥ ॐ

ॐ श्री नमो हगवतवीन हृदाय द
रुपजापतिष्ठिनः कंदनाय नीला
वृक्षपण्य सूर्यमाला भूषितवि
हगि हसलय युग्मन्नपलयाय
महिषाकूपकपर्पूनादिकंगंधल
पन्नपल्यविक्रपहगन्नव २ गा



उय२ दव२ शुवन गिन यन कव
धर्म महाकाल उैन म३ भिवाय हू
हृद॥ ॥ ॐ क्री कृष्ण वाससि सिंह
वदति महा वदति महा ऐन वि स
र्व पत्र कर्म धी सिनी पत्र मनु कें
दति सर्व ह ग द म ति सर्व ह ग

वृ. वन्ध२ सर्व विघ्नान् क्तिन्दि२
सर्व व्याधिनि कृकय२ सर्व दु
ष्टान् एह२ ज्ञाता जिक कनाल
दंष्ट्र पत्यु गित क्रीन मा सुग स्वा
हा॥ १००॥ माला कनिष
माला मनु॥ ॐ क्रीन म३ कृष्ण वा

ससिधगसहस्रकाटि सिंहसन
सहस्रवदनअष्टादशपुंड्रमहा
बलमहाबलपनाक्रमअङ्गि
अपनाङ्गितपुत्र्यंगितसेनप
नकर्मविधीमिति पनमन्त्राद
लनिपनमन्त्रात्मादिनि सर्वरुग

दमनीकैमोपैकोकोमोसर्वा
पदवैय४सबापदव्यात्ररु२
कोकोकोसर्वदेवानीमुखमूय
२विष्णुकिञ्चि२सर्वइष्टान्क
य२वक्रावयवालाङ्गिककना
लवदनसर्वयन्त्रालिह्वाटय

२ सप्तोदमूर्धन्य महापद्म्यङ्गि
महाविद्यम्भर्त्तिकुन् २ मम
पूतकय २ अं कौ कौ कू कू २
भाह २ मूर् २ अं कौ कू हू
पद्मगिन्स्वाहा ॥ ॥

अं कौ कू हौ कू कौ नमः ॥
अं श्री कौ ह्रीं कू हू नील
सनस्वस्व स्वाहा ॥
अं श्री कौ कू गौ गौ गौ पतय
वनवनद सर्वजन्म वधमान
य स्वाहा ॥

ॐ कूं हूं रं जय रं जय हूं ।
५ हूं हूं स्वाहा ॥ पंच मुं सवि
ॐ कूं सो ४ कूं कूं सी नमः ४
विपुन संध कूं कूं कूं कूं निया ॥

ॐ कूं हूं वां कूं कूं कूं गुं कूं
नाय कूं कूं कूं कूं कूं कूं ४
गुं कूं कूं कूं कूं कूं कूं
॥ ॥ ॐ कूं सि कूं द्विक नालि
कूं कूं कूं कूं कूं कूं कूं कूं ॥
ॐ

श्रीगुरुकालीदेवीश्री.पापू॥

ॐ क्री वदुकाय आपदुद्धान
य कृत् कृत् वदुकाय क्री स्वा
हा ॥ ॥ वदु कहै नया ॥

ॐ क्री वगला मुखी सर्वदृष्टा

नी वार्च मुख म्फुय जिह्वा की
लय की लय बुद्धि नाभय क्री
ॐ स्वाहा ॥ वगला मुखी या ॥

